ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र सितम्बर 2017 (प्रथम)

न्याय के नायक

सी. बी. आई. जज
श्री जगदीप सिंह

मासिक सत्संग

मासिक सत्संग प्रवचन देते हुए डा० प्रमोद प्रमार्थी।

उपस्थित आर्यजन।

सत्संग में अपने विचार रखते हुए आर्यजन।

सत्संग में यज्ञ करवाते हुए श्री जितेन्द्र शास्त्री।

वेद प्रचार मण्डल बैठक

जिला वेद प्रचार मण्डलों के मुखियाओं से विचार विमर्श करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

जिला वेद प्रचार मण्डलों के मुखियाओं से विचार विमर्श करते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य।

जिला वेद प्रचार मण्डलों के मुखिया विचार विमर्श करते हुए

जिला वेद प्रचार मण्डलों के मुखियाओं से विचार विमर्श करते हुए सभामन्त्री श्री उमेद शर्मा।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 15

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

सितम्बर, 2017 (प्रथम)
1 से 15 सितम्बर, 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–आर्य मर्यादाओं के प्रतीक श्रीकृष्ण 2
2. प्रभु को पाने के लिए विनम्रता को अपनाना होगा 4
3. स्वास्थ्य-चर्चा...... पित्ताशय की पथरी निकालने की अचूक दवा 5
4. समाज के निर्माण में अध्यापकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका 6
5. डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को सुनाई सजा 7
6. हम आस्तिक हैं या नास्तिक : एक चिन्तन 8
7. यूरोप यात्रा की एक झलक 9
8. जिला वेदप्रचार मंडल की आवश्यक बैठक सम्पन्न 10
9. आधुनिक राजनीति से अधिक महत्त्व वैदिक धर्म को दें 11
10. ऋषि दयानन्द और गुरुडम 13
11. इंसाफ की रोशनी : जज जगदीप सिंह 14
12. समाचार-प्रभाग 15

प्रवेश आरम्भ

दयानन्दमठ रोहतक परिसर में अनाथ बच्चों के लिए चौ० लखीराम आर्य के नाम से एक वैदिक अनाथालय चलाया जा रहा है। अनाथालय के अन्दर वैदिक दिनचर्या के साथ-साथ बच्चों के अन्दर अच्छे संस्कार डाले जाते हैं और भरसक प्रयास होता है कि वे अपने भावी जीवन में सफल हों। प्रवेश के लिए और रहने, पढ़ाई इत्यादि पर कोई शुल्क नहीं लिया जाता। आज से ही प्रवेश प्रारम्भ हो गया है नए जे.जे. एक्ट अनुसार बच्चा पूर्णतया अनाथ हो और उसके माता-पिता में से कोई भी न हो, वह पूर्णतया बेसहारा हो। अन्य जानकारी के लिए निम्नलिखित चलभाष पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं —राजवीर आर्य, प्रधान,
चौ० लखीराम आर्य अनाथालय, दयानन्दमठ, रोहतक मो० 9466725461

आर्य मर्यादाओं के प्रतीक श्रीकृष्ण

❑ उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

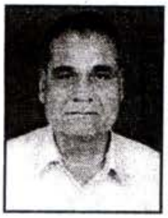

भारत के इतिहास रूपी आकाश में श्रीकृष्ण जाज्वल्यमान नक्षत्र के समान दीखते हैं। उनके जीवन का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वे असाधारण और अनुपम पुरुष थे। इतिहास में उसके समान सर्वांगीण जीवन नहीं दीखता। कारागार की विवशतापूर्ण परिस्थितियों में भी जन्म लेकर कोई मनुष्य संसार का महानतम नेता बन सकता है। यह श्रीकृष्ण का चरित्र देखने से स्वत: विदित हो जाता है। बंकिम के अनुसार श्रीकृष्ण ने अपने ज्ञान अर्जनी कार्यकारिणी तथा लोकरंजनी तीन प्रकार की प्रवृत्तियों को विकास की चरमसीमा पर पहुँचा दिया था। तभी उनके लिए संभव हो सका कि वे अपने समय में महान् राजनीतिज्ञ और समान व्यवस्थापक के पद पर आसीन हो सकते। बाल्यावस्था से लेकर जीवन के अन्तिम क्षणपर्यन्त श्रीकृष्ण उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहे। धर्म के अनुसार लोगों को स्वकर्त्तव्य पालन करना ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रहा। वे स्वयं धर्म में निष्ठा रखने वाले और उसके वास्तविक रहस्य को जानकर उसका उपदेश देने वाले महान् धर्म उपदेष्टा थे। ऋषि दयानन्द जी ने यहाँ तक कह दिया था कि "देखो, श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी नहीं किया।" इसलिए महाभारतकार को लिखना पड़ा–

यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः।

अर्थात् जहाँ कृष्ण है वहाँ धर्म है, जहाँ धर्म है वहाँ जय है। बाल्यकाल से ही देखिए एक दृढ़ विचार वाले और स्वस्थ मन तथा संकल्पनिष्ठ आत्मा वाले ब्रह्मचारी में जो-जो विशेषताएं होनी चाहिए वे श्रीकृष्ण में मिलती हैं। उनका शारीरिक बल अतुलनीय था जिससे उन्होंने बाल्यकाल में ही अनेक त्रासदायक एवं हिंसक जन्तुओं का वध किया। समय आने पर उन्होंने युद्धकौशल और रणनीति का सांगोपांग अध्ययन किया। युद्धनीति के वे प्रकाण्ड पण्डित थे। गदा युद्ध के अच्छे ज्ञाता थे। निर्भयता और चातुर्य से भरपूर थे। शारीरिक बल के अतिरिक्त उनका शास्त्रीय ज्ञान भी उच्चकोटि का था। वे वेदों और वेदांगों के अनुपम ज्ञाता थे। यह भीष्म की उक्ति से सिद्ध हो चुका है। साथ ही वे संगीत, चिकित्साशास्त्र, अश्व परिचर्या आदि नाना लौकिक विद्याओं के भी पंडित थे। अर्जुन के सारथी बनकर भयंकर युद्ध में अपने रथी की रक्षा करना आदि उदाहरण इन बातों को सिद्ध करने के लिए उपस्थित किए जा सकते हैं। ब्रह्मचर्य और संयम की दृष्टि से कहा जा सकता है कि वे एक पत्नीव्रत का दृढ़ता से पालन करते हुए भी उन्होंने सपत्नीक बारह वर्ष तक दृढ़ ब्रह्मचर्य का पालन किया। तदनन्तर उनके प्रद्युम्न जैसा पुत्र हुआ जो रूप गुण और सदाचार में सर्वथा अपने पिता के ही अनुरूप था। यह खेद की बात है कि पुराणकारों और कवियों ने श्रीकृष्ण के इस उज्ज्वल पहलू को विस्मृत करते हुए उन्हें कामी, लम्पट, कुटिल तथा युद्धलिप्सु के रूप में चित्रित किया।

श्रीकृष्ण सन्ध्या-उपासना तथा अग्निहोत्र आदि दैनिक कर्त्तव्यों का पालन करने में भी कभी प्रमाद नहीं करते थे। महापुरुषों की दिनचर्या भी जीवन को आदर्श और सुखी बनाने वाली होती है। **'महाजनो येन गतस्सः पन्थाः'** इस लोक को प्रसिद्ध वाग्धारा के अनुसार सामान्यजन महापुरुषों के ही अनुकरण करते हैं। श्रीकृष्ण हमारे लिए ऐसे ही महापुरुष हैं। उनकी दिनचर्या भी आर्य महापुरुषों जैसी थी। वैशम्पायन जी जनमेजय से कहते हैं–'हे जनमेजय! भगवान् श्रीकृष्ण जब आधा पहर रात बीतने में शेष रह गया तब वे शय्या छोड़ देते थे और जागकर ध्यान मार्ग में स्थित हो सत्य-सनातन परमेश्वर का चिन्तन, स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना किया करते थे। परमेश्वर के ध्यान के पश्चात् दैनिक कर्म शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान करते थे फिर गायत्री मन्त्र का जप करके अग्निहोत्र भी करते थे। तत्पश्चात् चारों वेदों के विद्वानों को बुलाकर वेदमंत्रों का पाठ एवं

उपदेश कराकर विद्वानों को गाय का दान किया करते थे। इससे स्पष्ट हो रहा है कि श्रीकृष्ण स्वयं परमात्मा नहीं थे, क्योंकि वे तो स्वयं परमात्मा की भक्ति, हवन तथा वेदों का स्वाध्याय करते थे। जब श्रीकृष्ण संधि का सन्देश लेकर हस्तिनापुर जा रहे थे तो मार्ग में ऋषियों के आश्रम में विश्राम किया। उस समय भी श्रीकृष्ण ने दैनिक स्नान आदि कार्यों को करके प्रात:कालीन सन्ध्या-वन्दन तथा अग्निहोत्र किया। तत्पश्चात् आश्रम के ऋषियों से कल्याण परक उपदेश सुने। इसी प्रकार महाभारत के उद्योग पर्व में यह भी मिलता है कि-

अवतीर्य रथात्तूर्ण कृत्वा शौचं यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह॥

श्रीकृष्ण जी जिस समय वृकस्थल पर पहुँचे तब सूर्य अस्त होने वाला था, उस समय उन्होंने रथ को रुकवाया और रथ से उतरकर शौच-स्नानादि करके सन्ध्या करने के लिए बैठ गए। श्रीकृष्ण महात्मा विदुर के निवासस्थान पर रात्रि को बहुत देर तक बातचीत करते रहे। वहीं रात्रि में विश्राम किया। प्रात:काल होने पर श्रीकृष्ण ने ब्राह्ममुहूर्त में उठकर प्रात:कालीन शौच-स्नानादि कार्यों को किया। तत्पश्चात् सन्ध्या तथा अग्निहोत्र किया। दुर्योधन आदि श्रीकृष्ण से जब मिलने आए थे उस समय में भी सन्ध्या समय वे सन्ध्या-वन्दन करने में लगे हुए थे। यही नहीं श्रीकृष्ण युद्ध समय में भी सन्ध्या समय होने पर सन्ध्या करना नहीं छोड़ते थे। संशप्तकों से युद्ध करते हुए अर्जुन को कुछ अनिष्ट की आशंका मन में होने लगी। उसकी आशंका को दूर करके श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों ने परमेश्वर की उपासना की और फिर रथारूढ़ होकर युद्धस्थल से अपने शिविर की ओर चल पड़े। उपरोक्त सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण ईश्वरभक्त थे और आर्य मर्यादाओं के पालक थे। श्रीकृष्ण राजनीति के कुशल खिलाड़ी थे, महान् नीतिवान् थे। महाभारत के युद्ध में उनकी रणनीति के कारण ही युद्ध में भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, दुर्योधन आदि कौरव पक्ष के सभी महारथी वीरों का एक अन्त हुआ और इस प्रकार युधिष्ठिर के धर्म राज्य संस्थापन रूपी महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस महान् कार्य की सिद्धि में श्रीकृष्ण का योगदान सर्वोपरि था। श्रीकृष्ण ने यथाशक्ति युद्ध का विरोध किया। उन्होंने न तो युद्ध को राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान माना और न ही किसी को उसमें कूद पड़ने को उत्साहित किया। यहाँ तक कि व्यक्तिगत मान-अपमान की परवाह किए बिना व स्वयं पांडवों की ओर से सन्धि प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर गए। यह सत्य है कि वे इस लक्ष्य को पूरा करने में असफल रहे। परन्तु इससे संसार को यह तो ज्ञात हो गया कि श्रीकृष्ण शान्ति स्थापना के लिए कितने उत्सुक तथा युद्ध के कितने विरोधी थे। उन्होंने स्वयं कहा था कि वे पृथ्वी को युद्ध की महाविभीषिका से बचा देखना चाहते थे। यह ठीक है कि दुर्योधन ने अपने दुष्ट स्वभाव तथा कुटिल प्रकृति के कारण उनकी बात नहीं मानी परिणामस्वरूप युद्ध परिहार्य हो गया। परन्तु लोगों पर यह अप्रकट नहीं रहा कि पांडवों का पक्ष सत्य न्याय और धर्म का पक्ष था तथा कौरव असत्य, अन्याय और अधर्म का आचरण कर रहे थे। संसार के लोगों को सत्य और न्याय का वास्तविक ज्ञान कराने में भी श्रीकृष्ण की दूरदर्शिता का परिचय मिलता है। युद्ध होना ही है जब यह निश्चित हो गया तो श्रीकृष्ण की विचारधारा इसके अनुसार बन गई। फिर तो उन्होंने अत्याचार के शमन और दुष्टों को दण्ड देने के लिए किए जाने वाले युद्ध को क्षत्रिय वर्ण के स्वर्ग का खुला दरबार बताया। श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व के इन पहलुओं की समीक्षा कर लेने के पश्चात् जीवन की इन विविधतापूर्ण एवं सर्वांगीण प्रवृत्तियों का समन्वित अनुशीलता एवं परिष्कार ही श्रीकृष्ण की विशेषताएं हैं। यही कारण है कि श्रीकृष्ण जैसा व्यक्ति इस देश में नहीं संसार में भी कदाचित् ही जन्मा हो। आर्य मर्यादाओं के अप्रतिम रक्षक राम उनके विविध व्यक्तित्व की तुलना अवश्य ही की जा सकती है। परन्तु दोनों के युग और जीवन की अन्य परिस्थितियों में मौलिक अन्तर? राम स्वयं आदर्श राजा थे किन्तु कृष्ण को आदर्श राज्य की स्थापन का कार्य स्वयं करना पड़ा। कृष्ण तो राजाओं के निर्माता परन्तु स्वयं राजसत्ता से दूर रहने वाले साम्राज्य संस्थापक थे। राम के समक्ष ऐसी कठिनाइयां नहीं आई जिससे कृष्ण को जूझना पड़ा। अत: किसी भी दृष्ट से क्यों न देखा जाए श्रीकृष्ण का चरित्र एवं व्यक्तित्व भूमण्डल में अद्वितीय ही माना जाएगा।

प्रभु को पाने के लिए विनम्रता को अपनाना होगा

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

जो मनुष्य अधिकार पाकर गर्व में चूर हो जाता है, वह शीघ्र ही अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लगता है। फलस्वरूप उसकी शक्तियाँ क्षीण होने लगती हैं और उसका अहंकार उसके तनाव को बढ़ावा देने वाला बन जाता है। परन्तु जो मनुष्य अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करता, जो मनुष्य प्राप्त अधिकारों का उपयोग परोपकार में करता है उसके अधिकार उसे बल प्रदान करते हैं। यदि हमें अधिकार मिले तो इसका प्रयोग दूसरों को सुख देने में करना चाहिए। स्मरण रहे–अयोग्य व्यक्ति को मिले अधिकार पतन का ही कारण बनते हैं।

परमपिता परमात्मा स्वयं हमारे अन्दर बैठा हुआ है। हम उसे बाह्य चक्षुओं से बाहर ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं, वह हमें बाहर कैसे दृष्टिगोचर हो सकता है। महात्मा कबीर ने ठीक ही कहा है–

ज्यों तिल में तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझ में है, जाग सके तो जाग॥

जिस तरह तिलों में तेल होता है, पत्थर में अग्नि होती है। उसी प्रकार परमात्मा भी हमारे अन्त: में है, परन्तु हम मूर्खतावश उसको सांसारिक वस्तुओं में ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं। जिसे हम मन्दिरों में, धार्मिक स्थलों में ढूंढ़ते फिरते हैं, वह प्रभु तो हमारे अन्दर विद्यमान है। फिर प्रश्न उठता है कि इन धार्मिक स्थलों की क्या आवश्यकता है? इनकी भी आवश्यकता है। ये स्थान एक वातावरण को बनाने के लिए होते हैं। जिस तरह हम स्वयं शिक्षित हैं परन्तु अपने बच्चे को पढ़ाने के लिए हमें उन्हें विद्यालय में भेजना पड़ता है। वहाँ वातावरण भी ऐसा होता है कि वहाँ अध्ययन, स्वाध्याय की बातें होती हैं, अध्यापक होते हैं, विद्यार्थी होते हैं। कुल मिलाकर एक ऐसा वातावरण होता है कि बच्चा न चाहते हुए भी पुस्तक खोलकर बैठ जाता है।

एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से मन में उठता है कि यदि परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी है, सबके अन्दर विद्यमान है तो हमें दृष्टिगोचर क्यों नहीं होता? उसका कारण है कि परमात्मा और उन आत्माओं के बीच में एक अहं नाम का दीवार है जो हमें उस प्रभु तक मिलने नहीं देती। यही वह रुकावट है, बाधा है, परदा है, जिससे हमें परमात्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता। जब तक हम इस अहंकाररूपी दीवार को नहीं हटायेंगे, उस दिव्य पुरुष (प्रभु) से भेंट नहीं हो सकेगी। हमें यजुर्वेद के 40वें अध्याय के पहले मन्त्र को जीवन में अपनाना होगा।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

हे मानव! यह सारा विश्व प्रभु से आच्छादित है। इस संसार में किसी वस्तु का दावा न कर। तेरा इस संसार में कुछ भी नहीं है, सभी कुछ परमात्मा का है। इनको अपना बनाने का प्रयत्न मत कर। हाँ, इसे भोगने का अधिकार तो तुझे हैं, लेकिन उसका स्वामी बनने का प्रयत्न मत कर। मन्त्रांश के दूसरे भाग में कहा है–

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

इस विश्व का त्याग पूर्वक भोग कर, लोभ मत कर, यह सब धन ईश्वर का है। विश्व के बड़े-बड़े राजा महाराजा इस संसार को अपना बनाते-बनाते चले गये। यह विश्व उनका न बन सका। यह हमारा अंधकार, अज्ञान और मोह ही है जो पुन:-पुन: हमें इस देह के बन्धनों में ले आता है।

हमारा मन इन्द्रियों के भोगों, विषय-विकारों, संसार के कर्म व्यवहारों पर मुग्ध है। हमारा मन जो कार्य करता है उसका परिणाम हमारी आत्मा को भुगतना पड़ता है, क्योंकि आत्मा और मन की गांठ बंधी हुई है। यदि मानव चोले में आकर भी हमें सुख और शान्ति प्राप्त नहीं होती तो हमारा जीवन व्यर्थ है। क्योंकि मानव योनि ही एक ऐसी योनि है जो भोग योनि के साथ-साथ कर्मप्रधान योनि भी है। विश्व की अन्य योनियां तो केवल भोग प्रधान योनियां ही हैं। विश्व में संभवत: कोई भी ऐसा मानव नहीं मिलेगा जिसे कभी दु:ख न मिला हो, कभी भी सुख न मिला हो। यह जो सुख-दु:ख मिलता है वह सब हमारे कर्मों के फलस्वरूप हैं। जब कर्म करते-करते यह बात आ जाती हैं कि यह सब 'मैं' कर रहा हूँ यह 'मैं' आते ही व्यक्ति पतित होना प्रारम्भ हो जाता है, मिट्टी में मिल जाता है। स्वामी रामदेव जी महाराज ने एक दिन अपने योग शिविर के प्रवचन में एक दृष्टान्त इस प्रकार प्रस्तुत किया है–अंग्रेजी में दो शब्द है Soul और Soil, Soul का अर्थ आत्मा और Soil का अर्थ मिट्टी। Soul और Soil में चार-चार अक्षर हैं Soul और Soil में पहला, दूसरा, चौथा अक्षर बराबर है परन्तु

Soul में तीसरा अक्षर (यू) U है और Soil में तीसरा अक्षर I (आई) है। व्यक्ति यदि अहंकार न करे विनम्रता में रहे, दूसरों को सम्मान करे (यू) U अर्थात् तुम (आप) महान् हो और मैं (आई) I न करें तो व्यक्ति उत्तम एवं श्रेष्ठ आत्मा Soul बन जाता है यदि वह I (आई) 'मैं' बनने का प्रयास करेगा तो वह Soil मिट्टी बन जाएगा। यदि हमें प्रभु को पाना है तो अहम् I (आई) का त्याग करना होगा।

बन्धुओ! यह अहं क्या वस्तु है यह विचारने का विषय है। हम पूरे दिन यह सोचते हैं कि यह मेरी सन्तान है, मेरी सम्पत्ति है, मेरी धन-सम्पदा है। वास्तव में ये सब परमात्मा की है। हम अपने आपको परमात्मा से भिन्न समझ बैठे हैं और उन वस्तुओं को अपना बनाने का प्रयास करते हैं, परन्तु ये सब वस्तुएं आज तक न किसी की बनी हैं और न बनेंगी। हम उन्हें अपना बनाने के प्रयास में इतना उलझ जाते हैं, इन आकृतियों और पदार्थों के साथ हमें इतना मोह हो जाता है कि वह हमारी आखों के सामने चित्रपट के चित्रों के समान घूमनी प्रारम्भ हो जाती है। यह संसार की आकृतियों और पदार्थों का मोह है जो प्रत्येक जीव को बार-बार देह के बन्धनों की ओर खींच करके ले जाता है। इसलिए बन्धुओ! हमें इस 'अहम्' को मिटाना होगा, इस आत्मा को शरीर न मानकर इस शरीर में बैठे शरीरी को परोपकार एवं पवित्रता के साबुन से धोना होगा। नम्रता और सरलता को अपनाना होगा। इसे एक दृष्टान्त से यूँ समझें।

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन अपने एक मित्र के साथ घोड़ा गाड़ी से कहीं जा रहे थे, मार्ग में एक मजदूर ने उन्हें थोड़ा झुक कर प्रणाम किया। उसके उत्तर में अब्राहिम लिंकन ने उससे भी और अधिक झुक कर प्रणाम किया। यह देखकर उनके मित्र ने उनसे पूछा- "आपने इस छोटे से मजदूर को इतनरा झुक कर प्रणाम क्यों किया है?" अब्राहिम लिंकन ने उत्तर दिया-"मैं नहीं चाहता हूँ कि नम्रता प्रकट करने में मुझसे कोई आगे निकल जाये।" यह सुनकर उसके मित्र का सिर श्रद्धा से झुक गया। इसी नम्रता, अहंकार शून्यता के कारण ही तो आज तक अब्राहिम लिंकन का नाम विश्व के लोग बड़े सम्मान से लेते हैं। अतः हमें विनम्रता, सरलता, श्रद्धा, स्नेह, प्यार, समर्पण को अपनाना होगा। अहंकार का त्याग करना होगा। 'अहम्' को मिटाना होगा और जब अहंकार मिट जाएगा तो प्रभु से साक्षात्कार असंभव नहीं होगा।

स्वास्थ्य-चर्चा....

पित्ताशय की पथरी निकालने की अचूक दवा

दोस्तो, मैं डॉ० सत्यपाल सिंह आर्य आयुर्वेदाचार्य आपको पित्ताशय में कैसे पथरी बनती है और उसके द्वारा क्या उपद्रव

होते हैं और उसके क्या लक्षण होते हैं। जब किसी रोगी को पेट में दर्द होता है और वह दर्द उदर में हमारे आमाशय के पास में होता है और बहुत जोर से होता है और रोगी को उल्टी आती है, जिसमें पीले रंग का पित्त निकलता है और रोगी को अपचन, भूख न लगना, चक्कर आना, पेट भरा-भरा-सा रहता है। तली हुई चीज खाने के तुरन्त पश्चात् अग्न्याशय के पास दर्द बढ़ जाता है, क्योंकि (Bile Salt) पित्त प्रकुपित हो जाता है। यह रोग उन्हीं लोगों को ज्यादा होता है जो लोग (Junk Food) फास्ट फूड जिसमें तरह-तरह के मसालों से निर्मित होता है जिससे हमारे Liver (जिगर) को ज्यादा कार्य करना पड़ता है। जिगर (Liver) के अन्दर (Perinchymatous) कोशिकाएं होती हैं जो पित्त का निर्माण करती हैं। उनको ज्यादा मात्रा में Bile Salt (पित्त) बनाना पड़ता है जिससे हमारा जिगर कमजोर होने लगता है, क्योंकि ये कोशिकाएं खराब होने लगती हैं, क्योंकि (Fast Food) जिसमें वसा (Fat) ज्यादा होती है वह इन कोशिकाओं पर (Diposit) जमने लगती है जिससे वह कार्यशील नहीं रहती और जो (Dead) मरी हुई बेकार कोशिका पित्त के साथ आकर हमारे पित्ताशय में इकट्ठी होने लगती है और धीरे-धीरे छोटे रेत जैसे कण होकर बड़ी पथरी बन जाती है जिससे पित्ताशय सुचारु रूप से कार्य नहीं कर पाता और पथरी पित्ताशय की दीवारों में चुभने लगती है, जिससे दर्द महसूस होने लगता है और पित्ताशय की कोशिकायें खराब होने लगती हैं और (Swelling) सूजन आ जाती है, जिसको हम Cololithasis कहते हैं।

उपचार-जैतून का तैल (10 ML) 2 चम्मच, नीम्बू का रस (10 ML) 2 चम्मच हर पन्द्रह मिनट के पश्चात् सेवन करें। दो घण्टे तक यह दवा हफ्ते में एक बार सेवन करें। जब तक पथरी नहीं निकल जाती और इसके पश्चात् जो उपद्रव (Complications) आती है। जैसे कि पेट में दर्द होना, उसके लिए शंखभस्म एक रत्ती की मात्रा में दिन में दो बार ले सकते हैं और संक्रमण (Infection) रोकने के लिए Antibiotic यथा बलानुसार ले सकते हैं। दर्द तेज हो तो दर्द निवारक Buscopan Injection लगवा सकते हैं। आपको इस रोग से अवश्य लाभ होगा। **परहेज**-तली हुई चीजें व मिर्च-मसाले वाली चीजें त्याज्य रहेंगी।

समाज के निर्माण में अध्यापकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका

❑ आचार्य सर्वमित्र आर्य, प्रस्तोता, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

कोई भी राष्ट्र गौरवशाली तब होगा जब वह राष्ट्र अपने जीवन मूल्यों, परम्पराओं का निर्वाह करने में सक्षम हो और यह राष्ट्र सफल और सक्षम तब होगा जब शिक्षक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में सफल होगा और शिक्षक सफल तब कहा जाएगा जब वह प्रत्येक विद्यार्थी में राष्ट्र-चरित्र का निर्माण करने में सफल होगा।

प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य '**सा विद्यया विमुक्तये**' अर्थात् विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए और आज शिक्षा का उद्देश्य '**सा विद्या या नियुक्तये**' अर्थात् विद्या वही जो नियुक्ति दिलाए हो गया है। इस दृष्टि से शिक्षा के बदलते अर्थ ने समाज की मानसिकता को बदल दिया है। यही कारण है कि आज समाज में लोग केवल शिक्षित होना चाहते हैं सुशिक्षित नहीं।

शिक्षक का कर्त्तव्य छात्रों को केवल शिक्षित करना ही नहीं अपितु उन्हें संस्कारी बनाना है। उनके अन्दर केवल शब्द ज्ञान ही नहीं भरना है बल्कि उसे नैतिकता, कर्त्तव्य परायणता, सजगता तथा राष्ट्रप्रेम का पाठ पढ़ाना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। क्योंकि शिक्षक ही तो विद्यार्थी के लिए पिता, भाई और मित्र के समान होता है। अत: मित्र जैसे व्यवहार से उसे जीतना, भाई जैसे व्यवहार से उसे प्यार करना तथा पिता जैसे व्यवहार से उसे विकसित होने देना और शिक्षकीय रूप से उसे शिक्षा एवं दिशा देना सफलता है।

शतपथ ब्राह्मण में एक सूक्ति आदि है कि '**मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद**' वैदिक साहित्य में तीन उत्तम शिक्षक बताए हैं। पहला-माता, दूसरा-पिता और तीसरा आचार्य। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि वह सन्तान बड़ा भाग्यवान है, जिसके माता-पिता और आचार्य धार्मिक और विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, उतना किसी से नहीं। धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तब पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे। परन्तु आज ये तीनों गुरु शिष्य को शिक्षित करने लायक नहीं हैं। जब घर में माता-पिता बच्चों को सुसंस्कार देने की अपेक्षा बच्चों के सामने लड़ना-झगड़ना, गाली-गलौच करना, झूठ बोलना, नशा करना, अभक्ष्य भोजन करेंगे तो बच्चों पर क्या संस्कार पड़ेगा। उसे तो सीखना है, इन्हीं से सीखना है। ऐसे माता-पिता और गुरुओं के पास रहकर शिष्य भी आज इन्हीं जैसे बन रहे हैं। इसमें विद्यार्थियों का बिलकुल दोष नहीं है। क्योंकि शिक्षक का अर्थ होता है कि-**शि**-शिखर तक ले जाने वाला, **क्ष**-क्षमा की भावना रखने वाला, **क**-कमजोरी को दूर करने वाला। अर्थात् जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है और उसकी हर कमजोरी को दूर कर उसको सफलता तक ले जाता है, लेकिन महामूर्ख गुरु शिष्य के लक्षण महर्षि दयानन्द सरस्वती ने व्यवहारभानु में एक दृष्टान्त के माध्यम से बताया-

एक प्रियदास का चेला भगवानदास अपने गुरु से बारह वर्ष पर्यन्त पढ़ा था। एक दिन उसने एक दिन अपने गुरु से पूछा कि महाराज-मुझको संस्कृत बोलना नहीं आया। गुरु बोले-सुन बे! पढ़ने-पढ़ाने से विद्या नहीं आती किन्तु गुरु की कृपा से आ जाती है। जब गुरु सेवा से प्रसन्न होता है तब जैसे कुञ्जियों से ताला खोलकर मकान के सब पदार्थ झट देखने में आते हैं वे ऐसी बतला देते हैं कि हृदय के कपाट खुलकर सब पदार्थ विद्या तत्क्षण आ जाती है। सुन! संस्कृत बोलने की तो सहज युक्ति है। चेला भगवानदास महाराज वह क्या है? गुरु प्रियदास-संसार में जितने शब्द संस्कृत व देशभाषा में हों उन पर एक-दो बिन्दु धरने से सब कुछ संस्कृत हो जाते हैं। जैसे-लोटा-लोटां, जल-जलं, रोटी-रोटीं, दाल-दालं, शाक-शाकं आदि। चेला बोला-वाह-वाह गुरु के बिना क्षणमात्र में पूरी विद्या कौन बतला सकता है?

भारतीय संस्कृति में शिक्षकों को सम्मानजनक स्थान प्राप्त है और समाज में भी रहा है, लेकिन इन दिनों

क्रमश: पृष्ठ 7 पर......

डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को सुनाई सजा

सी.बी.आई. की विशेष अदालत के जस्टिस श्री जगदीप सिंह द्वारा डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को

सुनाई गई सजा का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा स्वागत करती है। जगदीप सिंह ने सभी प्रकार के प्रलोभन व दबावों को दरकिनार करके एक बलात्कारी, पाखण्डी व समाज में अन्धविश्वास फैलाने वाले बाबा को जेल के शिकंजों के पीछे करके न्यायपालिका का सम्मान बढ़ाया है। **आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य का कहना है कि ऐसे साहसी जज की बहादुरी पर हमें गर्व है। सभा उनकी हिम्मत और संकल्प की सराहना करते हुए उन्हें बधाई देती है।**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा डी.एस.पी. सतीश डागर व सीबीआई के उन सभी अधिकारियों, जिन्होंने इस सारे मामले को उजागर कर अंजाम तक पहुंचाया तथा उन पीड़ित बहनों को न्याय दिलाने में निर्भयता से जांच को पूरा किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा राजेन्द्रसिंह चीमा व अश्वनी बक्शी का भी आभार व्यक्त करती है कि उन्होंने रामचन्द्र छत्रपति पत्रकार के मर्डर की सीबीआई जांच हाईकोर्ट से करवाई, चाहे समय कितना भी लगा हो, परन्तु आखिर कुकर्मी बाबा कानून के शिकंजे में आ ही गया।

मा० रामपाल आर्य सभाप्रधान ने कहा कि आर्यसमाज ही एक ऐसा संगठन है, जो सत्य का मार्ग दिखलाता है। संत रामपालदास, आशाराम बापू व गुरमीत राम रहीम जैसे पाखण्डी जो अपने आपको भगवान कहकर लोगों में पाखण्ड व अन्धविश्वास के द्वारा घिनौने कुकर्म करते हैं, इनकी कार्यशैली को लोगों के सामने उजागर करते हैं। अब इनकी काली करतूतें सामने आने लगी हैं। अब इन्होंने बारी-बारी अपने कुकर्मों के कारण वास्तविक स्थान पर पहुंचना आरम्भ कर दिया है। पहले आशाराम बापू, फिर संत रामपाल दास अब राम रहीम की बारी आ गई है।

यदि प्रशासन, सरकार व न्यायपालिका ऐसे ही ईमानदारी से कार्य करती रही तो अनेक पाखण्डियों का पर्दाफाश हो सकता है। जब मा० रामपाल आर्य व उनकी कार्यकारिणी ने एक अक्तूबर से वेदों के प्रचार व प्रसार की ऐसी योजना बनाई है जो गांव-गांव, शहर-शहर एवं गली-कूचों में जाकर वेदों का प्रचार करेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा **'वेदों की ओर लौटो'** अभियान का घर-घर जाकर डंका बजायेगी। उसके लिए छह प्रचार वाहनों का प्रबन्ध कर दिया है। अब लोगों को इन पाखण्डी बाबाओं की अश्लीलता का पता चल गया है। अब आर्यसमाज की बातों को जो सत्य के मार्ग पर चलने का रास्ता दिखाता है, लोग सुनेंगे ताकि उनके बच्चों का भविष्य ढोंगी बाबाओं के हाथों में आने से बचाया जा सकेगा।

समाज के निर्माण में........ पृष्ठ 6 का शेष.......

भौतिकवादी दृष्टिकोण के चलते शिक्षा की गुणात्मकता का ह्रास होता जा रहा है और गुरु-शिष्य संबंधों की पवित्रता को ग्रहण लगता जा रहा है। आए दिन अखबारों में कोई न कोई दुर्घटना आ जाती है, जिससे शर्म से आंखें नीची हो जाती है।

शिक्षक को ईश्वर का दूसरा रूप माना गया है। प्राचीन काल की गुरुकुल परम्परा से लेकर वर्तमान की विद्यालयीन शिक्षा के दौर तक हर युग में शिक्षक पूजनीय रहे हैं, इसलिए हर माता-पिता अपनी सन्तानों को गुरु को सौंप देते हैं ताकि शिक्षक समाज को संवारने, उचित दिशा दिखाने के लिए बच्चों को सही शिक्षा, प्रेरणा, सहनशीलता, व्यवहार में परिवर्तन तथा मार्गदर्शन प्रदान करे उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाए।

एक आदर्श शिक्षक अच्छे और श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण होना व अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए जो शिक्षक समय का पालन करता है और योजना बनाकर समय विषय अनुसार ज्ञान प्रदान करता है वही सही गुरु कहलाता है।

अत: शिक्षक अपने संयम, सदाचार, आचरण, विवेक, सहनशीलता से बच्चों को महान बनाते हैं। हर किसी सफल व्यक्ति के पीछे एक आदर्श शिक्षक का हाथ होता। इसीलिए सभी शिक्षकों से प्रार्थना है कि वह अब इस मानसिकता को बदले तथा व्यक्ति को केवल शिक्षित न बनाकर सुशिक्षित बनायें। शिक्षा को अर्थोपार्जन न बनाकर राष्ट्रनिर्माण की शिक्षा दें-

यो धर्म्यान् शब्दान् गृणात्युपदिशति सः गुरुः।

इति शम्।

हम आस्तिक हैं या नास्तिक : एक चिंतन

❑ गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

आइए! सबसे पहले तो यह जान लें कि आस्तिक या नास्तिक कहते किसको हैं। आपने अक्सर सुना होगा कि ईश्वर में विश्वास करने वाला आस्तिक और ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक होता है। मनुस्मृति के अनुसार '**नास्तिको वेदनिन्दकः**' अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान वेद की निन्दा करने वाला नास्तिक होता है, लेकिन क्या सब लोग वेदों को नहीं मानते? क्या सब लोग ईश्वर को नहीं मानते? आज तो सब लोग अपने आप को ईश्वर का भक्त कहते हैं। वेद का मानने वाला कहते हैं, लेकिन क्या वास्तव में हम ईश्वर विश्वासी हैं? वेदों को मानते हैं? इसके लिए हमें आत्म-निरीक्षण करना होगा, किसका करना होगा? सर्वप्रथम अपना कि हम किस श्रेणी में हैं? हमारे विचार कैसे हैं, हम ईश्वर के अस्तित्व को केवल मानते हैं या ईश्वर कैसा है, ये भी जानते हैं? ईश्वर के प्रति अपने दृष्टिकोण को जानने से पूर्व हमें स्वयं का निरीक्षण करना होगा अर्थात् अपने आपको देखना होगा। जिस प्रकार भौतिक जगत् में स्वयं को देखने के लिए आईना बनाया गया है ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में अपने आपको देखने के लिए हमारे ऋषियों ने आत्मनिरीक्षण की परम्परा प्रातः सायं 'ब्रह्मयज्ञ' अर्थात् 'सन्ध्या' के रूप में बनाई।

सर्वप्रथम इस यज्ञ के माध्यम से हम स्वाध्याय करते हैं, किसका? वेदादि ग्रन्थों का एवं आर्ष साहित्य का अर्थात् ऋषिकृत् ग्रन्थों का और स्वयं का। स्वयं का अध्ययन करने को ही आत्मनिरीक्षण करना कहते हैं अर्थात् अपने अन्तःकरण को झांकते हैं और देखते हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ और मेरा जीवन आस्तिक है या नास्तिक? क्या वास्तव में ईश्वर विश्वासी ही आस्तिक होता है? इसके लिए नास्तिक की परिभाषा को समझना होगा। एक दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार संसार में तीन प्रकार के नास्तिक होते हैं-

पहले प्रकार के नास्तिक वे होते हैं जो ईश्वर को मानते ही नहीं उनके अनुसार ईश्वर नाम की सत्ता है ही नहीं, न ईश्वर है, न धर्म है, न आत्मा है और न परमात्मा कुछ भी नहीं है। ये संसार अपने आप चल रहा है बस। ईश्वर की सत्ता को बिलकुल मानते ही नहीं जैसे कम्युनिस्ट लैनिनवादी होते हैं इस प्रकार के नास्तिक लोग स्टेटमेंट देते हैं कि 'देयर इज नो एजिस्टेंट ऑफ एनी सुप्रीम लोर्ड हू क्रिएट इन दिस यूनिवर्स एण्ड कन्ट्रोल' अर्थात् ऐसी कोई सत्ता नहीं जो सारे संसार को, ब्रह्माण्ड को चला रही है, ईश्वर नाम की चीज को मानते ही नहीं हैं, बिलकुल है ही नहीं बस ऐसे ही संसार चल रहा है।

दूसरे प्रकार के नास्तिक वे हैं जो ईश्वर को मानते हैं, ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं, लेकिन जैसा ईश्वर का स्वरूप है, उससे भिन्न अर्थात् उल्टा मानते हैं जो कि मिथ्याज्ञान है। कहने का तात्पर्य है कि जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही न कहना और वैसा ही न मानना मिथ्याज्ञान है। जैसे ईश्वर है तो सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, निराकार, लेकिन ये जो दूसरे प्रकार के नास्तिक हैं, वे उसे एकदेशी एक जगह पर मानते हैं, इसलिए वे नास्तिक कहलाते हैं।

तीसरे प्रकार के नास्तिक देखिए कैसे हैं ये ऐसे हैं जो ईश्वर को जैसा है वैसा ही मानते हैं, लेकिन उसके अनुसार आचरण व व्यवहार नहीं करते अर्थात् ईश्वर को मानते तो हैं, परन्तु ईश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते और ईश्वर की आज्ञाओं को बतलाने वाला एक मात्र वेद है, जो ईश्वर प्रदत्त है, मनुष्यकृत नहीं।

आप सोच रहे होंगे कि लेखक यह सब बताकर कहना क्या चाहता है? तो उत्तर सुनिए यह सब कहने का मेरा मन्तव्य केवल इतना ही है कि हम आस्तिक अर्थात् ईश्वर को मानने वाले तो हों लेकिन हमारे आचरण और हमारे व्यवहार से ही लोगों को यह पता लगना चाहिए कि हमारा ईश्वर पर विश्वास अटूट है, जिसे कोई दुःख कोई परेशानी हिला नहीं सकती। कहने का मतलब है कि आज लोग केवल शाब्दिक रूप से बोल देते हैं कि हम ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं, कर्मफलदाता मानते हैं लेकिन इस सत्य को अन्तर्मन से स्वीकार नहीं करते। एक छोटी सी बात से आपको समझ में आ जाएगा कि मैं कहना क्या चाहता हूँ।

क्रमशः अगले अंक में.....

यूरोप यात्रा की एक झलक

–डॉ० जगदेव विद्यालंकार (सेवानिवृत्त प्राचार्य) 667-ए/29 तिलक नगर, रोहतक

मैं (जगदेव विद्यालंकार), मेरी पत्नी श्रीमती सन्तोष कुमारी, मेरे मित्र डॉ० खजानसिंह गुलिया (सेवानिवृत्त प्राचार्य), मेरे दूसरे मित्र श्री जगवीरसिंह अहलावत (सेवानिवृत्त गणित प्राध्यापक), मेरे तीसरे मित्र गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक-गुरुकुल कांगड़ी के परास्नातक, डीएवी कालेज चंडीगढ़ से संस्कृत प्राध्यापक के पद से सेवानिवृत्त डॉ० सुरेन्द्र कुमार तथा उनकी पत्नी श्रीमती स्नेहलता-इन छह सदस्यों का दल 'मेक माई ट्रिप' नामक पर्यटन एजेंसी के माध्यम से 11.08.2017 को इंदिरा गांधी हवाई अड्डा, पालम दिल्ली से दोपहर साढ़े बारह बजे उड़ान भरकर कतर की राजधानी दोहा में वायुयान परिवर्तित कर सायंकाल 8 बजे लंदन के हवाई अड्डे हीथ्रू पर अवतरित हुआ। हमारे पर्यटन-प्रबन्धिका श्रीमती रिमी, जो हम 34 भारतीयों की मार्गदर्शिका थी, ने दस दिन तक कुशल मार्गदर्शन किया।

हमने यूरोप के छह देशों का भ्रमण बस के द्वारा किया। 12.8.17 को पहले लंदन का दर्शनीय स्थल मैडम तुषाड (Madame Tussaud) देखा, जो एक प्रकार का संग्रहालय है, जिसमें राजाओं, राजकुमारों, खिलाड़ियों आदि के मोम के पुतले हैं तथा विविध प्रकार के रोचक दृश्य भी हैं। तत्पश्चात् टॉवर ऑफ लंदन देखा-यह भी एक संग्रहालय है, जिसमें सम्राटों के हीरे जवाहरात जड़े हुए मूल्यवान् चमकीले ताज रखे हुए हैं। कोहिनूर हीरा विशेष आकर्षण का केन्द्र है, जिसे अंग्रेज कभी भारत से लेकर गये थे। सायंकाल लंदन के सुन्दर एवं विशाल पार्क (हाइड) में कुछ समय बिताया। उसके बाद एक भारतीय भोजनालय में भोजन करके होटल में पहुंच गए। 13.8.17 को लंदन शहर के बीचोबीच बहने वाली टेम्स नदी के किनारे पर बने हुए लन्दन आई (London Eye) नामक यंत्र को देखा। जो एक विशाल गोल झूले या रहट की आकृति का है, जिसके चारों ओर गोलाई में लगभग 50 पारदर्शी गाड़ियां सम्बद्ध हैं। प्रत्येक में 20-25 पर्यटक बैठ सकते हैं। यह यंत्र लगभग आधे घण्टे में एक चक्कर पूरा करता है, इसकी ऊँचाई 270 मीटर है, ऊपर पहुँचकर पूरा लन्दन शहर दिखाई देता है, इसलिए इसका नाम लन्दन आई अर्थात् लन्दन की आँख है। तदुपरान्त नगर के मध्य में पार्लियामेंट स्क्वेयर नामक बड़े चौक पर गए, जहाँ चारों ओर क्रमशः पार्लियामेंट, चर्च, सुप्रीम कोर्ट तथा सचिवालय विद्यमान हैं। इंग्लैण्ड की जनसंख्या साढ़े सात करोड़ है, महानगर लंदन वहाँ की राजधानी है, जिसकी जनंसख्या 85 लाख है। नगर के दो भाग हैं एक का नाम लंदन सिटी है तथा दूसरे का नाम वैस्ट मिनीस्टर है।

महारानी का महल देखने के उपरान्त 'इंग्लिश चैनल' नामक समुद्र को पार करने के लिए सायंकाल आठ बजे 'हरविच' नामक इंग्लैण्ड की बन्दरगाह पर पहुँचे तथा 'स्टेनालाइन' नामक समुद्री जहाज में बैठकर 14.8.2017 को प्रातः 8 बजे हॉलैंड (नीदरलैण्ड) की बन्दरगाह हुक ऑफ हालैंड पहुंच गये। जहाज से ही समुद्र में उगते हुए सूर्य का मोहक दृश्य भी देखा। तदनन्तर 'मैड्रोडा' नामक सुन्दर पार्क को देखते हुए हालैंड की राजधानी 'एमस्टर्डम' गये और वहाँ नगर के मध्य बहती हुई 'एमस्टर' नदी में नौका विहार किया। नगर के भव्य भवनों की भी एक झलक देखी तथा सायंकाल बैलजियम की राजधानी ब्रसल्स पहुँचे तथा एक भारतीय भोजनालय में भोजन करके होटल में विश्राम किया। 15.8.17 को ब्रसल्स में ही नगर के मध्यम में विराजमान शाही महल और प्रशासनिक भवनों को देखा। अनेक भवनों के गुम्बद स्वर्णमण्डित थे। इस नगर की जनसंख्या 15 लाख है। यहाँ के चॉकलेट विश्वप्रसिद्ध हैं। बैलजियम 1830 में स्वतंत्र हुआ। यहाँ के राजा को लियोपोल की उपाधि से जाना जाता रहा है। हालैंड और बैलजियम की राष्ट्रभाषा 'डच' है। वहाँ के लोग फ्रैंच भाषा को बोलकर उसी प्रकार से स्वयं को गौरवान्वित समझते हैं जैसे भारत में अंग्रेजी बोलकर। कुछ जर्मन भाषा का भी प्रचलन है। ब्रसल्स में पाकिस्तानी लोगों का बाहुल्य है।

सायंकाल तक फ्रांस की राजधानी पेरिस पहुंचे और वहाँ का प्रसिद्ध दार्शनिक स्थल आइफैल टावर देखा। यह सम्पूर्ण टावर लोहे का बना हुआ है। इसकी ऊंचाई 320 मीटर है, तीन मंजिल हैं, लिफ्ट से जाने की सुविधा है। ऊपर से समस्त पैरिस नगर बहुत सुन्दर और छोटा दिखाई देता है। रात्रि में ग्यारह बजे इस टावर में एक विशेष प्रकार

क्रमशः पृष्ठ 12 पर......

जिला वेदप्रचार मण्डल की आवश्यक बैठक सम्पन्न

श्री रमेश आर्य कार्यकारी वेदप्रचार अधिष्ठाता द्वारा बुलाई गई जिला वेदप्रचार मण्डल की बैठक दिनांक 3.9.2017 को सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य की अध्यक्षता में सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई। इस बैठक में अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, सिरसा, फतेहाबाद, हिसार, महेन्द्रगढ़, भिवानी, रेवाड़ी, पलवल, फरीदाबाद, गुरुग्राम, झज्जर, सोनीपत, पानीपत, करनाल, जीन्द व रोहतक जिलों के संरक्षक, प्रधान व मंत्री उपस्थित हुए। इस बैठक में सभा अधिकारी संरक्षक स्वामी धर्मदेव जी, श्री उमेद शर्मा सभामन्त्री, कन्हैयालाल उपप्रधान, के अलावा सभा के प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य, श्री कमलसिंह आर्य, श्री जगदीश सींवर, वीरेन्द्र पाढ़ा अन्तरंग सदस्य भी शामिल हुए।

इस बैठक में 'वेदों की ओर लौटो' अभियान में तेजी लाने पर विस्तार से विचार-विमर्श किया। पिछली अन्तरंग बैठक में वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए गांव-गांव, कस्बे-कस्बे तथा शहर-शहर जाकर भजनोपदेशक एवं उपदेशक जोरशोर से अभियान चलाए। इसके लिए बड़े स्तर पर योजना बनाई गई है। इस कार्यक्रम को अमलीजामा पहनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने तीन नए छोटे वेदप्रचार रथ बनवाये हैं, तीन सभा के पास पहले हैं। उनमें प्रत्येक में एक भजनोपदेशक मण्डली एक उपदेशक रखा जाएगा। वेदप्रचार वाहन में माइक, मंच एवं लाइट का प्रबन्ध होगा।

सभाप्रधान ने बताया कि 15 सितम्बर तक नए वाहन बनकर आ जायेंगे, उनमें से एक सिरसा, फतेहाबाद व हिसार तीनों जिला वेदप्रचार मण्डल प्रधानों को तीनों जिलों का सम्मेलन बुलाकर सौंपा जाएगा। उनमें से एक महेन्द्रगढ़ व रेवाड़ी जिला सम्मेलन बुलाकर इसी माह के अन्त तक सौंपा जाएगा। वेदप्रचार मण्डल के प्रधान किस जिले में कितने दिन वेदप्रचार वाहन रहेगा, की व्यवस्था करेंगे।

उन्होंने बताया कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद के वाहन को फरीदाबाद, पलवल व गुरुग्राम जिलों के कार्यक्रमों के लिए पहले ही सौंप दिया गया है। 21 अगस्त से 26 दिसम्बर तक फरीदाबाद व पलवल के गांव का प्रोग्राम आरम्भ कर दिया है। इसके बाद गुरुग्राम के गाँव-गाँव के कार्यक्रम बनाये जायेंगे। एक वाहन जिला जीन्द वेदप्रचार मण्डल को पिछले महीने सम्मेलन करके सौंप दिया, जिन्होंने वेदप्रचार कार्य आरम्भ कर दिया है। पानीपत जिले का जिम्मा आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत ने लिया हुआ है। उन्होंने अब तक 104 गाँव में कार्यक्रम कर लिये हैं। उनका अपना वाहन है जिसमें आचार्य अभय आर्य निदेशक, जगदीश चहल, संदीप आर्य जिला वेदप्रचार मण्डल के मंत्री तथा उनकी पूरी टीम जोरशोर से अभियान पर लगी हुई है। रोहतक, झज्जर व सोनीपत के लिए बड़ा वेदप्रचार वाहन दिया गया है जो अब सोनीपत में चल रहा है। 15 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक जिला झज्जर में कार्यक्रम होगा उसके बाद रोहतक में कार्यक्रम दिये जायेंगे। रोहतक में तो सभा की गाड़ियाँ भी प्रचार अभियान में शामिल होती रहती हैं।

सभाप्रधान ने बताया कि पंचकूला, अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र व कैथल जिलों का जिम्मा आचार्य देवव्रत महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश के निर्देशानुसार गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने ले लिया है। उनके पास दो वेदप्रचार वाहन तो पहले थे एक और बनवा लिया उस गुरुकुल में भजनोपदेशक व उपदेशक तैयार किये जा रहे हैं। उनके द्वारा तीन मण्डली तो पहले तैयार है और कुछ होने वाली है। उन्होंने कुरुक्षेत्र के प्रत्येक गाँव को कवर कर लिया तथा यमुनानगर व कैथल के गाँव में लगे हुए हैं।

इस तरह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने वेदों के प्रचार व प्रसार के लिए बीड़ा उठा लिया है। सभा इसमें सभी प्रदेश की आर्यसमाजों, आर्यसमाज से जुड़े व्यक्तियों तथा आर्यसमाज की विचारधारा से सहमत सभी बुद्धिजीवी व्यक्तियों व संगठनों से सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। अब सभी उन पाखण्डियों के चेहरे से नकाब उठ गया है। अपने आपको भगवान् कहने वाले उन पाखण्डियों के कुकर्मों को जनता ने देख लिया है। वे लोग जहां उनका असली स्थान था वहाँ पहुंच गये हैं, बाकी पहुँच जायेंगे। केवल मात्र स्वामी दयानन्द जी द्वारा बनाया गया संगठन आर्यसमाज ही बचा है। जो लोगों को भ्रमित नहीं करता, वह तो सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा प्रदेश वासियों से अपील करती है कि अपने बच्चों के भविष्य को देखते हुए आर्यसमाज की विचारधारा को अपनाते हुए आओ '**वेदों की ओर लौटें**'।

आधुनिक राजनीति से अधिक महत्त्व वैदिक धर्म को दें

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए की थी जिसके कारण पूरे संसार में शान्ति एवं सुख पैदा किया जा सकता है, क्योंकि-

वेद का ही धर्म एक सच्चा सनातन धर्म है।
वेद के अनुकूल जो हो कर्म सच्चा कर्म है।
वेद का ही ज्ञान सच्चा ज्ञान है भगवान् का।
हो सदा कल्याण इससे विश्व के इंसान का।

आर्यसमाज स्थान या मन्दिर का नाम नहीं है। आर्यसमाज श्रेष्ठ पुरुषों के संगठन का नाम है। श्रेष्ठ पुरुषों की परिभाषा- जो बात में हो उसको जबान से बोले, जो बात जुबान बोले वही कर्म से करे, क्योंकि सत्य को सत्य कहना धर्म के अनुकूल है, इसके कारण किसी का पक्ष करना भूल है।

किसी भी समाज के संगठन के लिए निश्चित सिद्धान्तों की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हिन्दू जाति के वर्तमान असंगठन का बहुत बड़ा कारण यह है कि इसके सिद्धान्त निश्चित नहीं रहे, जो आया उसने मनमानी की और हिन्दू जाति के टुकड़े-टुकड़े हो गए। महर्षि दयानन्द ने इसी रोग का निराकरण किया और पूरी जाति को एक सूत्र में बान्धने का प्रयत्न किया। जब तक आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के बनाए वैदिक नियम उपनियमों को अपनाता रहेगा तो उसकी उन्नति ही होती जाएगी और आर्यसमाज हिन्दू जाति को बरबाद होने से बचा सकेगा।

मनुष्य को चाहिए कि उसी की स्तुति करे जो प्रशंसित कर्म करे और उसी की निन्दा करे जा निन्दित कर्मों का आचरण करे, वही स्तुति जो सत्य कहना वही निन्दा है, जो किसी के विषय में झूठ बकना है (ऋग्वेद)।

जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यों अनुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्यसमाज भारत देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। कितना ही अच्छा धर्म क्यों न हो तब तक उसके नियमों व सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करके दिखाने वाले लोग नहीं होंगे तब तक वह धर्म उन्नति नहीं कर सकता। अतः कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिये। नरतन का उद्देश्य न केवल विलास है। जब मनुष्य शुभ विचारों से प्रेरित होकर शुभ कार्यों को आरम्भ करता है, शुभ उपायों एवं साधनों का ही अवलम्बन करता है, तभी उत्तम परिणाम और शुभ फल प्राप्त होते हैं। लोग अनुचित उपायों से ही शुभ फलों की प्राप्ति की आशा किया करते हैं यह कैसी विचित्रता है। जैसे जल से नदियां और समुद्र बढ़ते हैं वैसे धर्मयुक्त पुरुषार्थ से मनुष्य सदा बढ़ते हैं।

आत्मा की शुद्धि करने का उपाय है वेदाध्ययन एवं योगाभ्यास। वैदिक दर्शन प्रार्थना, पूजा व उपासना का प्रयोजन आत्मशुद्धि मानता है। उपासना परमात्मा के लिए नहीं की जाती। यह मनुष्य जाति की शान्ति, आत्मविश्वास व उत्थान के लिये की जाती है।

मनुष्यों की सब कामना परिपूर्ण करने वाले परमेश्वर की आज्ञा पालन करके और अच्छी प्रकार पुरुषार्थ से विद्या का अध्ययन, विज्ञान, शरीर का बल, मन की शुद्धि, कल्याण की सिद्धि तथा उत्तम से उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति सदैव करनी चाहिए। इस सम्पूर्ण यज्ञ की धारणा व उन्नति से सब सुखों को प्राप्त होके औरों को भी सुख प्राप्त कराना चाहिये तथा सब व्यवहार और पदार्थों को नित्य शुद्ध करना चाहिये (यजु०)। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि जो कोई सभा में अन्याय होते को देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरुद्ध बोले वह महापापी होता है। अतः सभी आर्यों को सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्यसमाजों में सिद्धान्त विरुद्ध कार्यों को बढ़ाने में अधिकारी, विद्वान्, सदस्य आदि सभी दोषी हैं। सच यह है कि ऋषि एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति जो हमारी दृढ़ता, निष्ठा, कट्टरता तथा वचनबद्धता होनी चाहिए, वैसी नहीं है। हम केवल पद लाभ मान, महत्त्व व अहंकार की पूर्ति के लिये आर्यसमाजी हैं (आर्य नहीं) इसी कारण आर्यसमाज में बिखराव, अराजकता, अनुशासनहीनता आदि

बढ़ रही है। हमारे जीवनों से धार्मिकता समाप्त हो रही है। इसी कारण ऐसा हो रहा है।

नकली राजनेता एवं उनके सेवक आर्यसमाजों में प्रवेश करके आर्यसमाज के माध्यम से अपनी स्वार्थपूर्ति के कारण आर्यसमाजों को भी बर्बाद करने पर तुले हुए हैं। इनमें झूठा बोलने एवं मीठा बोलने के कारण नोट और वोट कमाने में सफलता प्राप्त करके अहंकार उत्पन्न हो जाता है। पदों के चक्कर में रहना अहंकार की बात है–'**चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात**' है। सभी धर्मशास्त्रों में झूठ बोलना बहुत बड़ा पाप माना गया है। इसलिए परमात्मा की न्याय व्यवस्था के आधार पर इसका परिणाम भोगना पड़ता है। '**विनाशकाले विपरीत बुद्धि**' इन्हें कोई अच्छे सुझाव दें तो उसे बुरा मानते हैं और जो इनको बुरी बात कहे उसे अच्छा मानते हैं। आर्यसमाजों के नेता बन जाते हैं, लेकिन आर्यसमाजों को सेवकों की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि मनुष्य जाति एक ही जाति है परन्तु इन नकली राजनेताओं के कारण मनुष्य जातियां दिन पर दिन बढ़ती जा रही हैं। इसका सबसे बड़ा कारण आरक्षण है। पूरे संसार में भारत ही एक ऐसा है जिसमें आरक्षण के कारण मानवता का ह्रास होता जा रहा है। अत: राजनीति धर्म सम्मत होनी चाहिए न कि सम्प्रदाय सम्मत। इसी से हम सबका भला होगा।

अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म का आधार है। जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करे उसे ही उसका अधिकार प्राप्त कराया जाए। लेकिन भारत का बड़ा दुर्भाग्य है कि कर्त्तव्य का पालन करना अधिक लोगों ने पाप मान लिया है और अधिकार को प्राप्त करना पुण्य माना जा रहा है। यह भारत में सबसे बड़ी अराजकता का कारण है।

हमारे देश में पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होने पर लोगों ने धन को ही परम ऐश्वर्य मान लिया है परन्तु धन ऐश्वर्य नहीं होता। उत्तम गुणों को धारण करना ही ऐश्वर्य होता है। इन्द्रियों को जीतना ही ऐश्वर्य होता है। मन को शुद्ध करना, ईश्वर के गुणों को धारण करना, आलस्य-प्रमाद को दूर करना, व्यवहारों को शुद्ध करना। अन्दर की बुराइयों को देखकर, बुराई को दूर करना। अच्छाइयों को अपने जीवन में धारण करना ही सबसे बड़ा ऐश्वर्य है।

यह स्मरण रखिये कि यदि आर्यसमाज जीवित है तो राष्ट्र भी जीवित रहेगा और विश्व की मानवता भी, अन्यथा राष्ट्रों के कुटिल चक्कर और साम्प्रदायवादिता एवं जात-पात हमें पूर्ण विनाश की ओर ले जायेगी। अत: मेरी सभी आर्यों से प्रार्थना है कि नकली राजनेताओं के पिछलग्गू न बनकर दयानन्द के सेवक बनें। इसी से हम सबका भला होगा।

यूरोप यात्रा की एक..... पृष्ठ 9 का शेष.....

की जगमगाहट कुछ क्षणों के लिए होती है। अगले दिन 16.8.17 को पैरिस का यह प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल डिज्नीलैण्ड देखा, जो विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ है और अनेक आकर्षक, रोचक और कुछ भयावह दृश्य भी देखने को मिले। वहां की झलकियां बच्चों को अधिक मुग्ध करती थी। सायंकाल वहां का प्रसिद्ध बाजार शोजेलिजे भी देखा, वहाँ पर एक विशाल गेट जो इण्डियागेट के सदृश था, जिसे नेपोलियन गेट भी कह सकते हैं, क्योंकि नेपोलियन द्वारा जीती हुई चौदह लड़ाइयों को उस गेट पर मूर्तिकला के रूप में उकेरा गया है। नेपोलियन अपने जीवन में केवल एक वाटरलू की लड़ाई में ही हारा था।

17.8.17 को प्रातराश के पश्चात् जर्मनी के लिए रवाना हुए और सायंकाल ब्लैक फोरेस्ट क्षेत्र में टिटिसी (Titisee) नामक नगर में पहुंचे जहाँ एक सुन्दर झील को देखा। जर्मनी और स्विटजरलैंड का सौन्दर्य इसलिए भी अधिक है, क्योंकि यह पर्वतीय क्षेत्र है। 18.8.17 को स्विटजरलैंड के लिए चले। मार्ग में पर्वत शृंखलाओं के मध्य काष्ठनिर्मित भवन था जो 'कुक्कुक्क्लाक' के नाम से था, जिसमें विक्रय के लिए मुख्य रूप से घड़ियां थी, जो 'कुक्कुक्' की ध्वनि उत्पन्न करती थी। स्विटजरलैंड में प्रवेश करने के उपरान्त रियान नदी पर एक मोहक जलप्रपात का कुछ देर आनन्द लिया और सायंकाल तक जूरिक नगर में पहुंचे जिसके मध्य में निमान्थ नदी बहती है और नगर के सौंदर्य को द्विगुणित करती है। नदी के दोनों किनारों पर अनेक गिरिजाघर तथा अन्य विविध गगनचुम्बी अट्टालिकाएं विद्यमान हैं। हमारी प्रबन्धिका भोजन के लिए भारतीय भोजनालय में ले जाती थी जहां हमें किसी प्रकार की प्रतिकूलता का सामना नहीं करना पड़ता था। 19.8.17 को हम जूरिक से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लूसन नामक नगर में गए जहां नगर के मध्य लियर नदी बहती है। वहां विशाल विक्रय केन्द्र 'कासाग्राण्डे' से अपनी इच्छानुसार खरीददारी की। क्रमश: अगले अंक में......

ऋषि दयानन्द और गुरुडमवाद

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

सन् 1877 में दिल्ली दरबार के समय स्वामी जी ने विभिन्न मत-सम्प्रदाय के प्रमुखों के सामने मानवता के प्रति करुणा भरे हृदय व शास्त्रीय ज्ञान व तर्क शक्ति से पूर्ण बुद्धिपूर्वक मतैक्य का सत्याग्रह किया। सब दयानन्द के सदाशय से सहमत होने के बाद भी हठ, दुराग्रह, स्वार्थ के कारण उसे मान न सके। उस समय केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी से आग्रह किया कि वे लोगों को यह कहें कि हमको परमेश्वर ऐसा कहता है। सेन महोदय ने कहा कि ऐसा कहने से स्वामी जी को बहुत सहायता मिलेगी। उस समय स्वामी जी ने श्री केशवचन्द्र को स्पष्ट किया कि वे ऐसा झूठ नहीं बोल सकते। उन्होंने कहा कि ईश्वर अन्तर्यामी है, क्या वह किसी के कान में कहने आता है? जो लोग स्वयं को ईश्वर का दूत, बेटा बताते हैं, उनका यही झूठ ईश्वरीय ज्ञान वेद से अलग होने का, अलग-अलग पतपंथ चलने का, व्यक्तिपूजा का कारण बनता है। इनके अनुयायी परमात्मा को गौण और गुरु को मुख्य मान लेते हैं। यह गुरुडमवाद सत्य ज्ञान, सत्य कर्म, सत्य उपासना में बड़ी बाधा है।

ऋषि दयानन्द वेद, ईश्वर के प्रति समर्पित हैं, उन्हें लेशमात्र भी कोई ऐसी शर्त स्वीकार नहीं जो मनुष्य को सत्य के प्रति भ्रमित करे। आज स्वयं को परमात्मा का मैसेंजर बताने वाले जेल में हैं।

आज बाबाओं के राजनेताओं से ऐसे सम्बन्ध हैं, जिनके बल पर वे अपने काले धन को सफेद करते हैं, अपना व्यापार चमकाते हैं। साधु हो तो दयानन्द जैसा। उदयपुर की घटना है। एक दिन जब स्वामी जी महाराणा सज्जनसिंह से मिलकर जाने लगे तो कुछ पटेल लोग उनसे मिले और न्यायालय में चल रहे किसी मुकदमे के सम्बन्ध में महाराणा से सिफारिश के लिए विनती की। उस समय स्वामी जी ने उन्हें कुछ उत्तर दिया तथा हाथ के संकेत से उन्हें चले जाने का इशारा किया। इस सारे घटनाक्रम को महाराणा स्वयं कुछ दूर मौलवी अब्दुर्रहमान के साथ खड़े देख रहे थे। उन्होंने मौलवी को पटेलों के पास यह जानकारी लेने के लिए भेजा कि उनकी स्वामी जी से क्या वार्तालाप हुई? पटेलों ने मौलवी को बताया कि हमने स्वामी जी से अपने मुकदमे के सम्बन्ध में आग्रह किया था, परन्तु स्वामी जी ने कहा कि हम साधु हैं, हमें इन कार्यों से क्या प्रयोजन, महाराणा जी से ही मिलो। मौलवी ने जब यह बात वापिस आकर महाराणा को बताई तो महाराणा ने कहा देखा मौलवी! हमने कहा था कि सांसारिक धन्धों से सर्वथा पृथक् रहने वाला ऐसा पुरुष कोई नहीं दिखाई देता।

आजकल अनेक ढोंगी बाबा मक्कर से दुनिया ठगते हैं तथा ऐशो-आराम का जीवन जीते हैं। स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश के एकादर्श समुल्लास में इनका आदर्श लिखते हैं-'**रोटी खाइये शक्कर से और दुनिया ठगिये मक्कर से।**' आजकल मुझे भी ऐसे '**जिज्ञासु**' मिलते हैं और आपको भी मिलते होंगे जो पूछते हैं कि सरकार इन्हें दण्ड क्यों नहीं देती? इसका उत्तर स्वामी जी ने इसी समुल्लास में दिया है। वहाँ '**जिज्ञासु**' ढोंगियों से प्रश्न करता है- "**जो तुम ऐसा पाखण्ड चलाकर अन्य मनुष्यों को ठगते हो तुमको राजा दण्ड क्यों नहीं देता?**" मतवाले- "**हमने राजा को भी अपना चेला बना लिया है। ह मने पक्का प्रबन्ध किया है, छूटेगा नहीं।**" आज हम स्वयं ऋषि की लेखनी, वाणी को सत्य देख रहे हैं। मंत्री से प्रधानमंत्री और संवैधानिक पदों का क्या कहें, इनके चित्र भविष्यवक्ताओं, तन्त्र-मन्त्र द्वारा रोग, दुःखों को दूर करने का ठेका लेने वालों के साथ छपते हैं।

ऋषि जी गुरुडम का एक बड़ा दोष इस प्रकार देखते हैं-"**एक यह भी तुम्हारा दोष है जो पश्चात्ताप और प्रार्थना से पापों की निवृत्ति मानते हो। इसी बात से जगत् में बहुत से पाप बढ़ गये हैं।**" इसी बात की आड़ लेकर पर्दे के पीछे बड़े पाप होते हैं। अभी गुरमीत राम रहीम के प्रसंग में मीडिया से '**पिताजी की माफी**' वाली बात सामने आई।

सामाजिक व पारिवारिक व्यवहार काटते हैं। मन्त्र द्वारा देहेन्द्रिय, प्राणान्तःकरण, स्त्री, स्थान, पुत्र, धन का

क्रमशः पृष्ठ 14 पर......

इंसाफ की रोशनी : जज जगदीप सिंह

सिर्फ पांच साल की सर्विस में ही जगदीप ने इंसाफ की ऐसी रोशनी दिखाई कि जुर्म की घनी अंधेरी गलियों में खौफ है। कानून का डर क्या होता है और किए की सजा मिलनी तय है, यह जगदीप ने अपने फैसले में साबित कर दिखाया है। 17 साल पहले डेरे में जिन दो साध्वियों के साथ रेप हुआ, उसके दोषी को सलाखों के पीछे पहुंचाना कोई आसान काम नहीं था। बिना डर, भय और दबाव के जगदीप सिंह ने ऐसा फैसला सुनाया, जिसकी गूंज हरियाणा या देश ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में सुनाई पड़ी।

डेरा सच्चा सौदा पर साध्वियों के यौन शोषण मामले के फैसले पर पूरे देश की ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी निगाहें लगी थीं। इस हाईप्रोफाइल मामले में जीन्द जिले के रहने वाले न्यायिक सेवा के विशेष अधिकारी जगदीप सिंह ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया। 15 साल पहले 2002 में डेरामुखी पर दो साध्वियों के यौन शोषण का आरोप लगा था। जगदीप सिंह को पिछले साल ही सीबीआई के विशेष जज के तौर पर पदस्थ किया गया है। जगदीप सिंह को बेहद न्यायप्रिय, सक्षम, कठोर और सटीक रवैये वाले अधिकारी के तौर पर जाना जाता है। सीबीआई की विशेष अदालत में उनके सहयोगी भी उनकी शैली और प्रतिभा की तारीफ करते हैं। जगदीप सिंह 2012 में हरियाणा न्यायिक सेवा के अधीन सोनीपत में पदस्थ हुए थे। यह उनकी पहली पोस्टिंग थी। इसकी दूसरी पोस्टिंग सीबीआई कोर्ट में की गई। सीबीआई कोर्ट में तैनाती मिलना कोई आसान काम नहीं है। जगदीप सिंह ने इस मामले में ऐतिहासिक फैसला देकर यह साबित कर दिया कि कानून से ऊपर कुछ नहीं।

न्यायिक सेवा में आने से पहले जगदीप सिंह पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट में प्रैक्टिस कर चुके हैं। वे साल 2002 और 2012 में कई सिविल और क्रिमिनल केस लड़ चुके हैं। उन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी से 2000 में कानून की डिग्री पूरी की। जगदीप के परिवार से जुड़े लोग कहते हैं कि बचपन से ही वे प्रतिभावान रहे हैं। जगदीप सिंह को बहुत ही मेहनती और न्यायिक अधिकारी माना जाता है।

जज जगदीप सिंह 5 सितम्बर, 2016 को भी सुर्खियों में आए थे। वे हिसार से पंचकूला आ रहे थे। जीन्द के ईगराह गांव के पास सड़क हादसा हुआ था। नैनो कार में सवार चार लोग बुरी तरह से घायल थे। जगदीप सिंह वहां से गुजर रहे थे। उन्होंने गाड़ी रोकी और वहां खड़े होकर एम्बुलेंस के लिए फोन किया। सामने से जवाब आया, एम्बुलेंस उड़कर तो आएगी नहीं, थोड़ा समय लगेगा। लेकिन शायद, उन चारों के पास उतना समय नहीं था। यह भांपते ही जगदीप अपनी गाड़ी में लेकर पीजीआई रोहतक पहुंचे और उनका उपचार कराया।

ऋषि दयानन्द और गुरुडम.... पृष्ठ 13 का शेष.......

समर्पण कराते हैं। आर्यसमाज जैसी संस्था जब आपत्ति करती है तो कुछ बातें पुस्तकों में माता-पिता की सेवा आदि की भी लिख देते हैं। चाहे कोई मत या उसकी बात कितनी पुरानी या प्रसिद्ध हो, वेदविरुद्ध है तो स्वामी जी को मान्य नहीं।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

स्वामी जी उत्तर देते हैं कि यह गुरु माहात्म्य गुरुगीता भी एक बड़ी पोपलीला है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और परब्रह्म परमेश्वर के नाम हैं। उसके तुल्य गुरु कभी नहीं हो सकता। गुरु तो माता, पिता, आचार्य और अतिथि होते हैं। ये सत्य सिद्धान्त उस व्यक्ति ने प्रकाशित किये जिसके सामने स्वयं गुरुपद के अनेक प्रलोभन आए। उन्हें अस्वीकार करके ही वे आप्तपुरुष बन गए। उनकी इस बात को अवश्य मानें-**''जैसा आर्य्यसमाज आर्य्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।''**

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी	23 से 24 सित० 2017
2.	आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)	6 से 8 अक्तू० 2017
3.	आर्यसमाज तिलक नगर (रोहतक)	14 से 15 अक्तू० 2017
4.	आर्यसमाज बसई (गुरुग्राम)	27 से 29 अक्तू० 2017
5.	आर्यसमाज सैक्टर-3, फरीदाबाद	2 से 4 नव० 2017
6.	आर्यसमाज धनौंदा (महेन्द्रगढ़) (वेद पारायण यज्ञ)	1 से 3 दिस० 2017

–रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

समाचार-प्रभाग

स्वामी शक्तिवेश व श्रीकृष्ण जन्मोत्सव सम्पन्न

झज्जर, 16 अगस्त। वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर एवं आर्यसमाज कलोई के तत्त्वावधान में आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शक्तिवेश जी महाराज व योगिराज श्रीकृष्ण का जन्माष्टमी समारोह स्वामी जी के पैतृक गांव कलोई में बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें यज्ञ-भजन-प्रवचन का कार्यक्रम हुआ जिसकी अध्यक्षता आर्यजगत् के प्रख्यात संन्यासी स्वामी धर्ममुनि आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जिला झज्जर ने की तथा ओजस्वी मुख्य वक्ता स्वामी रामवेश जी महाराज (जीन्द) रहे। यज्ञब्रह्मा आचार्य आनन्ददेव तथा यजमान देवेन्द्र आर्य, कुणाल आर्य व विवेक आर्य रहे।

इस अवसर पर योगाचार्य रमेश कोयलपुर व कुमारी दीपा आर्य के निर्देशन में बच्चों द्वारा यौगिक क्रियाओं का सुन्दर प्रदर्शन किया गया। ईश्वरसिंह तूफान, श्री धनीराम बेधड़क व पं० रमेश कौशिक द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुति दी और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। मुख्यवक्ता स्वामी रामवेश जी ने कहा कि योगिराज श्रीकृष्ण का दिया गीता उपदेश मानव कल्याण के लिए व दैनिक जीवन में अपनाने योग्य है। मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन का निर्देश गीता में दिया गया है जिससे मनुष्य सुख-शान्ति पा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्वामी धर्ममुनि जी महाराज ने हमें अपने जीवन को महापुरुषों के बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। युवकों को सिने-कलाकारों का नहीं, बल्कि देश पर मरने वाले शहीदों की जीवनी से प्रेरणा लेनी चाहिए और जीवन को देशसेवा के लिए अर्पित करना चाहिए तभी समाज व देश में सुधार व विकास होगा। कार्यक्रम में मंच का संचालन पं० जयभगवान आर्य व सुशांत आर्य ने किया। प्रबन्ध व्यवस्था श्री वेदप्रिय आर्य व श्री देवेन्द्र आर्य की टीम ने किया। कार्यक्रम के बाद भण्डारे का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री द्वारकादास रिटा० प्राध्यापक, सूबेदार भरतसिंह, भगवानसिंह आर्य, राव रतीराम, ओमप्रकाश, राजेन्द्र यादव, प्रेमदेव पहलवान, लीला पहलवान खुडन, कर्णसिंह, रामकर्ण दीक्षित, करतारसिंह, मुख्त्यारसिंह, जगमाल सिंह, महेन्द्र सिंह प्रधान आर्यसमाज बेरी, ओमप्रकाश मंत्री आर्यसमाज बेरी आदि बड़ी संख्या में महिला व पुरुष हाजिर रहे। प्रभावशाली बच्चों व कार्यकर्त्ताओं को सत्यार्थप्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

वेदप्रचार मण्डल फरीदाबाद एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के संयुक्त तत्त्वावधान में वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन श्री ऋषिपाल आचार्य जी की देखरेख में किया गया। श्री होतीलाल आर्य प्रधान, श्री देशबन्धु आर्य संरक्षक, श्री रामवीर आर्य महामंत्री, श्री देवीराम आर्य कार्यकारिणी सदस्य, श्री राजेन्द्र सिंह बीसला संरक्षक, श्री गुलाबसिंह आर्य, श्री महाशय दुलीचन्द जी, श्री धर्मेन्द्र आर्य आदि ने समय-समय पर कार्यक्रमों में भाग लेकर पूरा सहयोग किया। श्री संदीप आर्य भजनोपदेशक, श्री हरीश आर्य ढोलक वादक, श्री रामवीर आर्य प्रभाकर महामन्त्री, के मधुर भजनों व उपदेशों का कार्यक्रम बहुत सराहनीय रहा। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियों पंकज व प्रदीप द्वारा भी राष्ट्रभक्ति एवं प्रभुभक्ति के गीतों से कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये गये थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा योग का प्रदर्शन किया गया जिसमें विशेष रूप से मल्लखम्भ का कार्यक्रम विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। निम्नलिखित स्थानों पर वेदप्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ-

डीग, सागरपुर, सुनपेड, दयालपुर, प्रहलादपुर, बहबलपुर, सीकरी, कोशली, अनंगपुर, लकलपुर, किरण पब्लिक स्कूल जवां, ग्राम चौपाल जवां, तिलपत, नीमका जिला जेल, आदर्श नगर एवं आर्यनगर बल्लभगढ़, ददशिया और गोछी आदि ग्राम में वेदप्रचार किया गया।

गुरुकुल के वेद प्रचारकों ने निकाली नशा उन्मूलन एवं जन जागरण यात्रा

कुरुक्षेत्र, 6 सितम्बर 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत व गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सैनी के ओजस्वी मार्गदर्शन में चल रहे वेद प्रचार अभियान के तहत राजकीय उच्च विद्यालय, सुरखपुर में सात दिवसीय आर्यवीर दल योग एवं जीवन निर्माण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुल के योग प्रशिक्षक सचिन आर्य एवं जितेन्द्र आर्य द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। शिविर का भव्य समापन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में शाहाबाद के खण्ड शिक्षा अधिकारी रामदिया गागट जी पहुंचे, वहीं गुरुकुल के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता समरपाल आर्य, भजनोपदेशक तृषपाल विमल व सुभाष आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों द्वारा शिविर में सीखे गये सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, डम्बल, लेजियम, स्तूप निर्माण, योगासन आदि का हैरतअंगेज प्रदर्शन किया गया जिसे देख कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों के परिजनों के तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा विद्यालय परिसर गूंजा दिया। बीईओ गागट ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक आचार्य देवव्रत व प्रधान कुलवंत सैनी द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में किये जा रहे नशामुक्ति अभियान, पाखण्ड खण्डन, जैविक कृषि तथा आपसी भाईचारे को बढ़ावा देना आदि की मुक्त कंठ से सराहना की तथा बच्चों को आर्य समाज के सिद्धान्तों और वैदिक सभ्यता व संस्कृति का अनुसरण करने का आह्वान किया। अंत में विद्यालय के प्रिंसीपल इन्द्रजीत सिंह ने बीईओ रामदिया गागट व गुरुकुल के प्रचारकों का आभार व्यक्त किया। वहीं, गुरुकुल के वेद प्रचारकों ने बौद्धिक अध्यक्ष चन्द्रपाल आर्य के नेतृत्व में गांव सम्भालखी में नशा उन्मूलन एवं जन जागरण यात्रा निकाली। वेद प्रचार अधिष्ठाता समरपाल आर्य ने बताया इस यात्रा के माध्यम से लोगों को नशा, कन्या भ्रूण-हत्या, पाखण्ड आदि बुराइयों से बचने का संदेश दिया गया। इस शोभायात्रा में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वेद प्रचारक सचिन आर्य, जयराम आर्य, जितेन्द्र आर्य, सोनू आर्य, आर्यमित्र, सोहनवीर आर्य, तनिष्क आर्य, भीष्म आर्य, बलदेव आर्य सहित भारी संख्या में आर्यवीर शामिल रहे।

वेदप्रचार मण्डल जिला रेवाड़ी का निर्वाचन

वेदप्रचार मण्डल जिला रेवाड़ी का निर्वाचन दिनांक 7 मार्च, 2017 को सर्वसम्मति से किया गया था, जो इस प्रकार है-संरक्षक-स्वामी जीवानन्द नैष्ठिक, प्रधान-महात्मा यशदेव (यशवन्त), उपप्रधान-श्री देशराज आर्य, मंत्री-श्री जसवन्त कुमार आर्य, उपमंत्री-श्री सत्यप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री कमलसिंह आर्य, लेखानिरीक्षक-श्री धर्मवीर नम्बरदार, प्रेस-प्रवक्ता-महाशय जयप्रकाश आर्य।

शोक समाचार

1. चौधरी देवसीराम आर्य गांव मुन्नावाली जिला सिरसा का 103 वर्ष की आयु में दिनांक 24 अगस्त 2017 को स्वर्गवास हो गया। उन्होंने लम्बे समय तक आर्यसमाज की सेवा की। वे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के भक्त थे। आर्यसमाज के कार्यों में बढ़चढ़कर भाग लेते थे। चौ० छोटूराम जी जब लाहौर में मंत्री थे उन्होंने इनको कृषि विभाग में नौकरी लगवाया था। वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार किया गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति देवे।

2. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की कोषाध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा आर्या की बड़ी बहन श्रीमती अंगूरी देवी का सुनारिया चौक रोहतक में दिनांक 26 अगस्त 2017 को 72 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे गत कुछ दिनों से बीमार चल रही थी। वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार किया गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति और दु:खी परिवार को इस इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

3. महाशय सूरजमल आर्य पूर्व मन्त्री आर्यसमाज बरोदा जिला सोनीपत का स्वर्गवास दिनांक 6 सितम्बर, 2017 को अपने निवासस्थान गांव बरोदा में हो गया। स्व० श्री सूरजमल आर्य जी आर्यसमाज के बड़े कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने उम्रभर महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताए मार्ग पर अपने जीवन को चलाया तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए पूरी निष्ठा के साथ कार्य किया। अपने कार्यों के लिए उन्हें दूर-दूर तक जाना जाता है। ऐसे सच्चे आर्य के स्वर्गवास हो जाने से परिवार, आर्यसमाज और राष्ट्र की बड़ी हानि हुई है। महाशय जी कुछ समय से बीमार थे और चल-फिर नहीं सकते थे। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति और दु:खी परिवार को इस इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

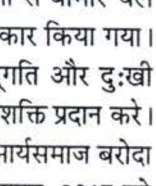

कन्या गुरुकुल पिल्लुखेड़ा

भापखेड़ा

घोघड़िया

सरल आध्यात्मिक शिविर

1 नवम्बर से 5 नवम्बर 2017

शिविराध्यक्ष

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
(निदेशक, दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात/सुन्दरपुर रोहतक)

अन्य विद्वान्

स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक (दर्शन योग महाविद्यालय सुन्दरपुर, रोहतक)
आचार्य देवप्रकाश (आचार्य व्याकरण, निरुक्त व दर्शन)
श्रीमती कमलेश राणा योगाचार्या (योग शिक्षिका)

स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक

आयोजक

वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी)
रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क सूत्र
09416139382
09466258105
09355674547

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

श्री ....

पता ...

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा